''जोधपुर नगर में जनसंख्या वृद्धि एवं भूमि उपयोग का बदलता स्वरूप''

डॉ0 सुनील कुमार, अधिष्ठाता कला विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
सोहन लाल, शोधार्थी, कला विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना

सूर्य नगरी के नाम से विख्यात जोधपुर प्राचीन मारवाड़ राज्य की राजधानी एंव वर्तमान राजस्थान राज्य का द्वितीय महत्वूपर्ण नगर है। यह राजय के पश्चिमी शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क धोराली धरती के पूर्वी आंचल में समुद्र सतह से 224 मीटर औसत ऊँचाई वाले भू भाग पर 120 मीटर ऊँची मेहरान दुर्ग स्थित पहाड़ी के दक्षिणी एवं दक्षिणी–पश्चिमी ढालानों पर स्थित है। इसकी निरपेक्ष स्थिति (Absolute Location) 26^{0}19' उत्तरी अक्षांस एवं 73001' पूर्वी देशान्तर पर है। वास्त्व में नगर जोधपुर भारत के महान् रेगिस्तान के पूर्वी भाग में स्थित है, जहाँ पूर्व में अरावली प्रदेश एवं पश्चिम के मरूस्थलीय प्रदेशों से अनेक कारवाँ मार्ग आकर मिलते थे। यह नगर दिल्ली आगरा को पाकिस्तान के हैदराबाद एवं कराँची से मिलाने वाले व्यापारिक मार्गों का मिलन बिन्दु एवं उत्तर मध्यकालीन भारत में मरूदेश, मेवाड़ एवं मालवा प्रदेशों को जोड़ने वाले कारवाँ मार्गो का संगम स्थल रहा है।

जोधपुर नगर का बसाव स्थान, जो बालुका प्रस्तर की लम्बे आकार में विछिन्न एवं खड़े तेज ढ़ाल वाली पहाड़ी का पूर्वी ढालान है, प्राकृतिक सुरक्षा की दृष्टि से अति उत्तम है। इसी छोटे स्थान पर स्थापित मध्यकालीन जोधपुर नगर वाद में समय के साथ–साथ बसाव स्थान के आकार के अनुरूप विकसित होता रहा है। वर्तमान नगर उच्च एवं सपाट शीर्ष वाली पहाड़ी के दक्षिण, दषिण–पश्चिम एवं दक्षिण–पूर्वी दिशाओं में स्थित उर्मिल मैदान पर अर्द्धचन्द्राकार या घोड़े के नाल के आकार में फैल गया। उत्तर दिशा के अतिरिक्त नगर चारों ओर 10–12 किलोमीटर के क्षेत्र में विस्तृत है। बसाव स्थान से उत्तर दिशा की ओर क्षेत्र विश्रृंखल पहाड़ियों एवं गहरी घाटियों की दृष्टि से जन शून्य है। इसी दिशा के क्षेत्र में नगर का प्रमुख स्रोत कायलाना (विशाल झील) स्थित है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

नगर भूतल पर मानव विकसित रचना है। किसी नगर विशेष का एक पूर्ण इकाई या उसके किसी एक पक्ष से सम्बन्धित अध्ययन की पूर्णता हेतु उस ऐतिहासिक परिदृश्य का परिचय देना आवश्यक होता है, जिसमें सम्बन्धित नगर के उद्‌भव से लेकर सम्पूर्ण विकास क्रम का कालानुसार घटनाचक्र समाहित रहता है। नगर जोधपुर के सन्दर्भ में अध्ययन करने से पूर्व भी इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि नगर का उद्‌भव या जन्म कब, कहाँ एवं किन परिस्थितियों में हुआ हैं और उसका वर्तमान स्वरूप क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर में नगर के वर्तमान, भूत और भविष्य तीनों का घनिष्ठ समबन्ध होने के परिणाम स्वरूप उक्त प्रश्न और भी अधिक औचित्यपूर्ण हो जाता है। ऐतिहासिक परिदृश्य सम्बन्धी ज्ञान यद्यपि नगर का परिचायक होता है तथापि यह उसके उद्‌भव एवं विकास का आधार भी होता है, जिस पर नगर का भावी ढाँचा अस्तित्व में आता है। अतः जोधपुर नगर के उद्‌भव एवं विकास तथा एसमें सहायक परिस्थितियों के सन्दर्भ में ऐतिहासिक परिदृश्य का ज्ञान ही प्रस्तुत अध्याय का मूल उद्देश्य हैं।

किसी भी नगर विशेष का उद्‌भव प्रारम्भ में एक छोटी बस्ती या निर्माण के रूप में होता हैं और उसके प्रादुर्भाव में सम्बन्धित क्षेत्र की तत्कालिक परिस्थितियों की सहज अनुकूलता का योगदान होता है। सामान्य रूप से नगर के उद्‌भव के मूल में आर्थिक शक्तियों का आधार महत्वपूर्ण होता है, परन्तु अन्य शक्तियाँ यथा भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक,

राजनैतिक, प्रशासनिक आदि का भी मिश्रित रूप में अवश्य सहयोग करती हैं। जोधपुर राजस्थान राज्य का एक मध्यकालीन नगर है। तत्कालीन भारत में हर्ष के पश्चात् हिन्दू युग का अन्त एवं राजपूत युग प्रारम्भ होता है, जो 1206 ई0 तक प्रभावी रहा, परन्तु उत्तर भारत मुख्यतः राजपूताना में राजपूतों की वीरता एवं शान का युग था, जो मध्य युग के मुस्लिम नियंत्रित भारत में भी रहा है। मुस्लिम युग में मध्य एवं पश्चिमी भाग के अतिरिक्त शेष भारत में नगरों के उद्भव एवं विकास हेतु स्थाई राजनैतिक पर्यावरण अधिक अनुकूल बन गया था। इस काल विशेष में मुस्लिम शासकों के प्रयास से अनके नगरों को बसने का प्रोत्साहन भी मिला, परन्तु राजपूताना में नगरों के उद्भव एवं विकास की परिस्थिति कुछ भिन्न रही। इस क्षेत्र के राजपूत शासकों में परस्पर फूट अलगाववाद एंव बढ़ते मुस्लिम प्रभुत्व के कारण असुरक्षा की प्रवृति प्रबल हो गयी थी। ऐसी परिस्थिति में राजपूत प्रभावित इस क्षेत्र के स्थानीय शासकों ने अपने प्रभुत्व को बनाये रखने के उद्देश्य से दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों या महलों की स्थापना की और उन्हीं दुर्गो के आस–पास नगरों का उद्‌भव हुआ उनमें से जाधपुर नगर भी एक है[1]।

प्रस्तावित शोध का महत्व

जनसंख्या भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है। वस्तुतः मानव (जनसंख्या) वह बिन्दु है जिसको केन्द्र में रखते हुए क्षेत्रीय लक्षणों का अवलोकन एंव निर्धारण किया जाता है। ज्ञातव्य है कि मानव (जनसंख्या) से ही अन्य भौगोलिक तत्वों को अर्थ एवं महत्व मिलता है। भौगोलिक क्षेत्र के सन्दर्भ में भूतल पर नगर मानव की श्रेष्ठतम विकसित रचना है। विश्व मानव समुदाय का एक बहुत बड़ा भाग नगरीय क्षेत्रों को घर एवं कार्यस्थल बनाए हुए है। नगर या नगरों का स्वरूप, आकारिकी सदैव उनमें निवास करने वाले, मानव समुदाय के विविध कार्य कलापों द्वारा प्रभावित होता है[1]। अतः किसी भी नगर या उसके जनसंख्या समबन्धी तथ्यों यथा नगर की जनसंख्या कितनी है? किन–किन वर्षों में किन कारणों से उसमें कमी या वृद्धि हुई, जनसंख्या वितरण, घनत्व, वृद्धि या परिवर्तन, लिंगानुपात, व्यवसायिक संरचना, जनसंख्या का सामाजिक एंव सांस्कृतिक स्वरूप आदि सभी का अध्ययन या ज्ञान करना परमावश्यक है। प्रस्तुत अध्याय का यही मूल उद्देश्य है।

सूर्य नगरी के नाम से विख्यात जोधुपर जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान राज्य का द्वितीय एवं पश्चिमी शुष्क भाग का प्रथम महत्वपूर्ण नगर है। यह वास्तव में थार मरूस्थल का प्रवेश द्वार है। मास्टर प्लान अभिलेखानुसार जोधपुर का कुल नगरीकृत क्षेत्र 26880 एकड़ है तथा कुल नगर निगम सीमा का क्षेत्रफल 78.60 वर्ग किलोमीटर या 19422 एकड़ है[2]। इसका 22.45 प्रतिशत (17.65 वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र परकोटा के अन्दर एंव शेष 60.95 वर्ग किलोमीटर या 77.55 प्रतिशत परकोट के बाहर फैला हुआ है। नगर विविध आकार एवं क्षेत्रफल वाले 60 वार्डो में विभक्त है[3]। कुल नगर वार्डो में से 42 परकोटा के बाहर एंव शेष 18 वार्ड अन्र के भू–भाग पर फैले हुए है। राज्य जनगणना प्रतिवेदन के अनुसार नगर जोधपुर की कुल जनसंख्या 860818 हैं[4], जिसकी 78 प्रतिशत बाह्य क्षेत्र के वार्डो एवं शेष 22 प्रतिशत आन्तरिक वार्डो में आवासित है। नगर में जनसंख्या का वितरण असमान है। उदाहरणार्थ नगर परकोटा के अन्दर 4360.23 एकड़ क्षेत्र में कुल जनसंख्या की 22.45 प्रतिशत जबकि बाहर के 15061. 77 एकड़ नगरीय क्षेत्र में कुल की 77.55 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। वार्ड संख्या 12, 13, 16, 21, 24, 30, 31, 32, 34, 39, 41 एवं 51 में जहाँ 10000 से कम वहीं वार्ड संख्या 2, 3, 4, 17, 46, 47, 49, 54, व 56 में 21000–40000 एवं इससे भी अधिक जनसंख्या हैं। शेक्ष

38 वार्डों में 10000–20000 के मध्य जनसंख्या रह रही है। नगर में सबसे कम जनसंख्या 7065 र्ड संख्या 39 एवं सबसे अधिक वार्ड संख्या 04 में 40590 हैं।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

किसी नगर या क्षेत्र विशेष की जनसंख्या के विश्लेषण में स्त्री–पुरूष अनुपात का समुचित ज्ञान परमावश्यक होता है। इससे उस नगर विशेष में जनसंख्या वृद्धि तथा जन समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है। लिंगानुपात कार्यशील जन शक्ति पर आश्रितों की संख्या का निर्धारण करने तथा उसमें (स्त्री–पुरूष अनुपात) पुरूष बाहुल्य या न्यूनता से कार्यशील जन शक्ति की उपलब्धि निश्चित होती है।

नगर जोधपुर में राज्य के अन्य नगरों की भांति स्त्री–पुरूष अनुपात में न तो कभी समानता रही और न ही उसमें कभी स्थिरता रही हैं। जनसंख्या गणना प्रतिवेदन अनुसार वर्ष 2001 में नगर जनसंख्या के अन्तर्गत 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या 874 थी। प्रथम जनगणना वर्ष 1901 से आगामी दशकों लिंगानुपात में सदेव 5 से 10 प्रतिशत के मध्य अन्तर रहा है और पुरूष सदा ही स्त्रियों से अधिक रहे हैं। गत शताब्दी के प्रथम दो दशकों में लिंगानुपात 905 रहा, परन्तु पश्चात् के दशकों में यह 193 में 810 से 1951 में 874 के मध्य पहुँच गया था। लिंगानुपात में पुरूषों का बाहुल्य एक जैविकीय घटना एवं स्त्रियों की कम गणना हो सकती है, परन्तु इसके लिए आवास उत्प्रास की प्रकृति (पुरूष विशिष्ट या स्त्री विशिष्ट) प्रसव काल में स्त्रियों की उच्च मृत्यु दर एवं नगर शिक्षण संस्थानों में उच्च शिक्षा व्यवस्था के परिणाम स्वरूप ग्रामीण छात्रों का नगर में बाहुल्य अधिक उत्तरदायी कारक है। आंशिक रूप से इसका कारण रोजगार की तलाश में कार्यशील पुरूष जनसंख्या का सामयिक स्थानान्तरण एवं अस्थाई रूप से नगर में आवास भी हो सकता है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

राज्य के अन्य नगरों की तुलना में जोधपुर नगर में लिंगानुपात अजमेर के अतिरिक्त अधिक है। अजमेर में 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या 889 है। अन्य सभी नगरों में 844 (कोटा नगर) से 855 (उदयपुर) के मध्य है। कोटा नगर में स्त्री–पुरूष अनुपात कम होने का मुख्य कारण तीव्र औद्योगिकीकरण है, जिससे वहाँ पुरूष श्रमिक जनसंख्या का अधिक मात्रा में आवास हो सकता है।

नगर जोधपुर के विविध क्षेत्रों में स्त्री–पुरूष अनुपात में व्यापक भिन्नता देखने को मिलती है नगर के परकोटाबद्ध भाग में 1000 पुरूषों के पीछे 935 स्त्रियों एवं बाह्य नगरीय क्षेत्र में 857 स्त्रियाँ है। नगर के कुल 60 वार्डों में से 16 वार्डों यथा वार्ड संख्या 2, 3, 4, 7, 40, 41, 42, 45, 46, 47, 49, 54, 56, 57 एवं 58 में नगर के औसत अनुपात (1000 पुरूषों पर 874 स्त्रियाँ) से कम अर्थात् 679 से 870 के मध्य स्त्रियों तथा शेष अन्य वार्डों में नगर औसत से अधिक 874 से 922 स्त्रियाँ हैं। वार्ड संख्या 38 में सबसे अधिक (972 स्त्रियाँ) एवं वार्ड संख्या 49 में सबसे कम (679 स्त्रियाँ) हैं। इसका मूल कारण कि वार्ड ंख्या 49 में सैनिक छावनी है जहाँ स्त्रियों की अपेक्षा पुरूष संख्या ही अधिक है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dr. Bansal S.C. : Urban Geogrphy (Hindi) Meenaxi Publication Meeru, 2005, P.123
2. Tod, J. : Annales and Antiquities of Rajasthan, Vol.11, Routledge Kegan Paul Ltd., London, 1960,P.15
3. Erskine, K.D. : Rajasthan Gazetters, Vol. IIIA The Western Agency, Allahabad, 1909, P.56
4. Adams, A. : The Western Rajputana States, A Medico topographical and general account of Marwar, Sirohi and Jaisalmer, Junor Army and Navy Stores, London, 1899, P.50
5. Hendley, T.N. : Rulers of India and chiefs of Rajputana (1550 to 1897) W.Griggs, London, 1897, P.36